महाराजा सुहेल देव विश्वविद्यालय

आजमगढ़, उत्तर प्रदेश

दीक्षोत्सव 2025

के अंतर्गत

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

“पूर्वांचल का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अवदान”

(आजमगढ़ के विशेष संदर्भ में)

संरक्षक

प्रो० संजीव कुमार

कुलपति, महाराजा सुहेल देव विश्वविद्यालय, आजमगढ़

संयोजक

डॉ० निधि सिंह

हिन्दी विभाग, महाराजा सुहेल देव विश्वविद्यालय, आजमगढ़

आयोजक

हिन्दी विभाग

महाराजा सुहेल देव विश्वविद्यालय, आजमगढ़

12 सितम्बर 2025, शुक्रवार

समय- पूर्वाह्न 10 बजे

स्थान - न्यू सेमिनार हाल, विश्वविद्यालय परिसर

विश्वविद्यालय के बारे में

उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़ में स्थित महाराजा सुहेल देव विश्वविद्यालय की स्थापना उत्तर प्रदेश सरकार ने 2021 में की थी, यह एक राज्य विश्वविद्यालय है। इसका नाम ऐतिहासिक राजा सुहेल देव के नाम पर रखा गया है। विश्वविद्यालय का आवासीय परिसर आज़मगढ़ शहर के बसगित क्षेत्र में स्थित है, इससे संबद्ध कॉलेज आज़मगढ़ और मऊ जिलों में फैले हुए हैं। यह विश्वविद्यालय कला, वाणिज्य, विज्ञान, शिक्षा, इंजीनियरिंग, विधि और कृषि सहित विभिन्न संकायों में स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध कार्यक्रम प्रदान करता है। विश्वविद्यालय से कुल 468 कॉलेज संबद्ध हैं, जिनमें सरकारी, अनुदानित और स्ववित्तपोषित संस्थान शामिल हैं। यह विश्वविद्यालय आवासीय और संबद्ध प्रकृति का है, जिसमें प्रशासनिक भवन, छात्रावास, प्रयोगशालाएँ और अन्य बुनियादी ढाँचे जैसे पुलिस चौकी, पावर स्टेशन और एसटीपी प्लांट जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। दो बड़े शैक्षणिक भवन विद्यार्थियों के लिए हैं, जिन्हें पुरुष और महिला छात्रों के लिए अलग-अलग छात्रावासों द्वारा सहारा दिया गया है।

अपने आदर्श वाक्य "ज्ञानं संस्कृतिः विकासश्च परमो ध्येयः" (ज्ञान, संस्कृति और विकास ही सर्वोच्च लक्ष्य हैं) की भावना से प्रेरित होकर, कुलपति प्रो. संजीव कुमार के नेतृत्व में विश्वविद्यालय उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने और शोध व नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

पृष्ठभूमि

पूर्वांचल, उत्तर प्रदेश का एक सांस्कृतिक और साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध भूभाग है। यहाँ की मिट्टी में लोकजीवन की सहजता, लोकभाषा की मिठास और सांस्कृतिक विविधता की गहरी जड़ें हैं। यहाँ की भूमि ने ऐसे साहित्यकार और कलाकार दिए हैं जिनके योगदान ने न केवल हिन्दी-उर्दू साहित्य को समृद्ध किया बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत में अमिट छाप छोड़ी। आजमगढ़, पूर्वांचल का साहित्यिक और सांस्कृतिक केंद्र रहा है, जहाँ से हिंदी, उर्दू और भोजपुरी साहित्य के अनेक स्तम्भ हुए हैं- राहुल सांकृत्यायन, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', कैफ़ी आज़मी, अल्लामा शिबली नोमानी, डॉ० तुलसीराम, डॉ० कन्हैया सिंह जैसे रचनाकारों ने अपनी लेखनी से न केवल क्षेत्रीय पहचान बनाई बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति अर्जित की। पूर्वांचल का साहित्य ही नहीं, यहाँ की सांस्कृतिक परंपराएँ बिरहा, कजरी, नौटंकी, निजामाबाद की काली मिट्टी की कला, मुबारकपुर एवं बनारस की साड़ी भी क्षेत्र की विशिष्ट पहचान हैं। वर्तमान समय में, जब वैश्वीकरण और तकनीकी क्रांति के कारण पारंपरिक साहित्यिक और सांस्कृतिक मूल्यों पर नए प्रभाव पड़ रहे हैं, तब इन योगदानों को समझना, संरक्षित करना और नई पीढ़ी तक पहुँचाना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

उद्देश्य

पूर्वांचल की साहित्यिक परंपराओं का अध्ययन – भक्तिकाल, रीतिकाल, आधुनिक और समकालीन साहित्य में क्षेत्र के योगदान का विश्लेषण।

आजमगढ़ के साहित्यकारों का मूल्यांकन – हिन्दी, उर्दू, भोजपुरी साहित्य के प्रमुख रचनाकारों के योगदान पर चर्चा।

सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण – लोककला, लोकगीत, हस्तशिल्प और लोकनाट्य की वर्तमान स्थिति और संरक्षण के उपाय।

भाषाई विविधता का महत्व – भोजपुरी, अवधी और पूर्वी हिन्दी की साहित्यिक अभिव्यक्ति और उसकी भूमिका।

समकालीन चुनौतियाँ और अवसर – वैश्वीकरण व डिजिटल युग में पूर्वांचल की साहित्यिक-सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने की संभावनाएँ।

उप विषय

1- अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और प्रिय प्रवास

2- स्वतंत्रता आंदोलन में पूर्वांचल का योगदान

3- पूर्वांचल की कला एवं संस्कृति

4- समन्वयवादी कवि तुलसीदास

5- पं. मदन मोहन मालवीय का शैक्षिक योगदान

6- आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना

7- मुंशी प्रेमचंद के साहित्य में अभिव्यक्त समाज

8- पं. राहुल सांकृत्यायन का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अवदान

9- भारत की विरासत में पूर्वांचल का सांस्कृतिक महत्व

10- पं. दीनदयाल उपाध्याय का शैक्षिक एवं सामाजिक योगदान

11- डॉ. कन्हैया सिंह का साहित्यिक प्रदेय

12- जयशंकर प्रसाद की प्रासंगिकता

13- मार्कण्डेय की कहानियों में ग्रामीण चेतना

14- आजमगढ़ का भौगोलिक परिवेश और उसका साहित्यिक सृजन पर प्रभाव

15- पूर्वांचल के लोकगीतों में स्त्री मनोविज्ञान: आजमगढ़ के विशेष संदर्भ में

उपर्युक्त विषय के अतिरिक्त आप शीर्षक पर केंद्रित अन्य उप विषय का चयन भी कर सकते हैं।

शोध पत्र का प्रारूप

1- शोध पत्र- हिन्दी के लिए एम एस वर्ड में 12 के आकार में क्रुतिदेव 10 फॉन्ट में होना चाहिए एवं अंग्रेजी के लिए एम एस वर्ड में 12 के आकर में टाइम्स न्यू रोमन फ़ॉन्ट में होना चाहिए।

2- शब्द सीमा न्यूनतम 3000

3- शोध पत्र में न्यूनतम 05 संदर्भ अवश्य दें।

4- शोध पत्र में नाम, पद, संस्थान एवं अपना ईमेल आईडी अवश्य अंकित करें।

5- शोध पत्र दिए गए ईमेल आईडी पर भेजें hindivibhagmsdu@gmail.com

6- शोध पत्र को ISBN नंबर के साथ पुस्तक रूप में प्रकाशित किया जाएगा।

7- शोध पत्र भेजने की **अंतिम तिथि 28.8.2025** है।

8- शोध पत्र प्रस्तुति के बाद पैनल द्वारा चुने गए शोध पत्रों को सर्वश्रेष्ठ पेपर के रूप में पुरस्कृत किया जाएगा।

9- रजिस्ट्रेशन दिए गए लिंक अथवा QR के माध्यम से किया जा सकता है-

https://forms.gle/uybJHX4g5eL8uBaw9

पंजीकरण शुल्क

शिक्षक- ₹ 700

शोध छात्र- ₹ 500

विद्यार्थी- ₹ 300

Ms NIDHI SINGH

पंजीकरण शुल्क दिए गए UPI ID अथवा QR के माध्यम से किया जा सकता है।

nidhi2306@ybl

सेमिनार से संबंधित किसी भी प्रकार की सहायता के लिए निम्नलिखित ईमेल आई डी पर संपर्क करें।

hindivibhagmsdu@gmail.com

सह-संयोजक

मनीषा सिंह

आयोजन सचिव

हिमांशु राय

आयोजन समिति

डॉ. प्रियंका सिंह

वैशाली सिंह

हिमांशु शेखर

शुभम राय

सूर्य प्रकाश अग्रहरि

संपर्क- डॉ. निधि सिंह- 7905297436
हिमांशु राय- 9868435474
मनीषा सिंह- 9718788756

विश्वविद्यालय का पता

असपालपुर से 2.4 किमी आज़मगढ़-गाजीपुर राजमार्ग पर, आज़मगढ़, उत्तर प्रदेश-276128

www.msdsu.ac.in

विश्वविद्यालय पहुँचने के लिए दिए गए QR को स्कैन करें ⟹